ISBN: 978-93-5917-896-7

अवसेरी के किस्से: बुन्देली चटखारे

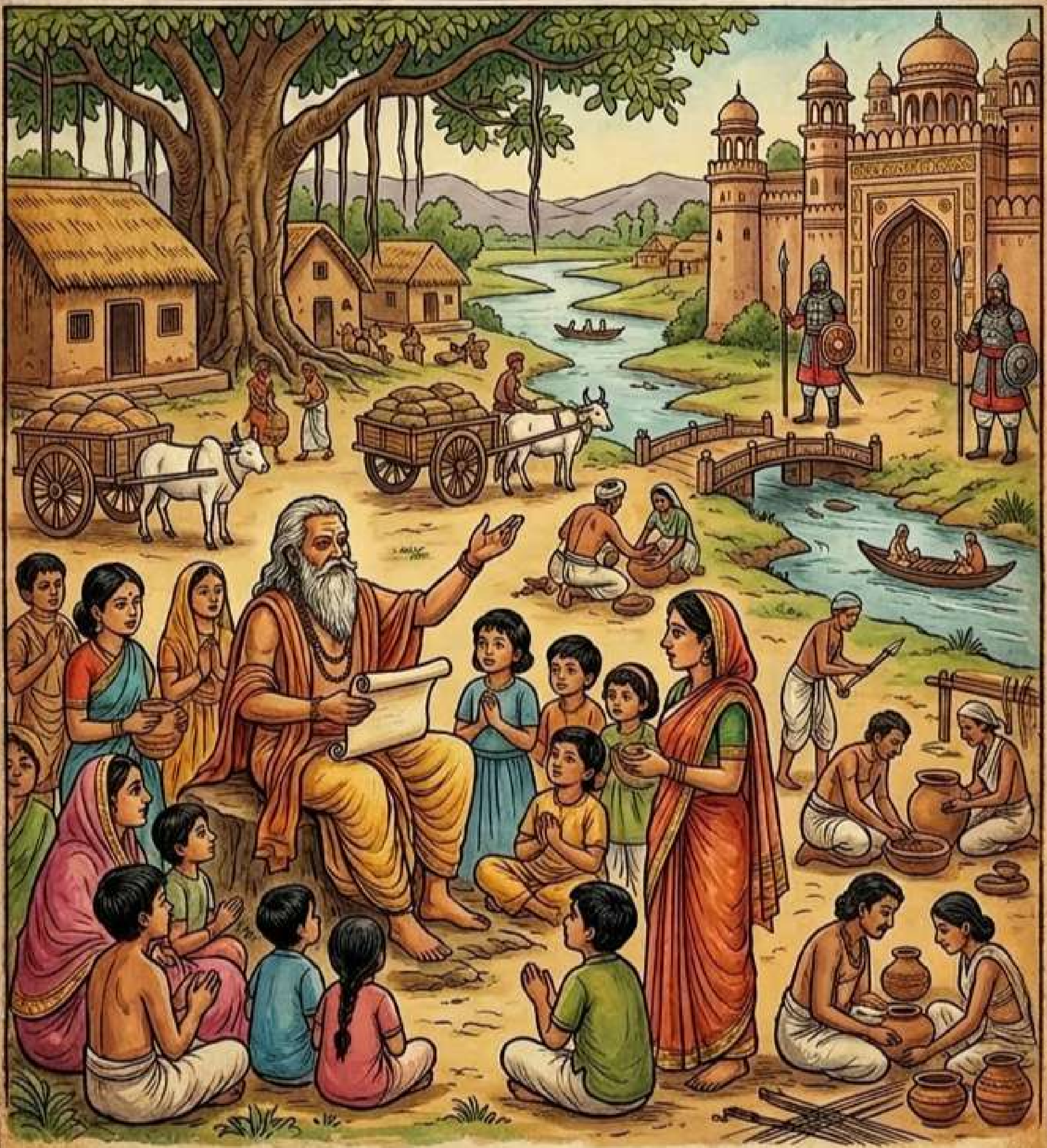

डॉ. राजीव अग्रवाल
अभिषेक ओझा

अवसेरी के किस्से: बुन्देली चटखारे

डॉ. राजीव अग्रवाल

डीन–शिक्षा संकाय

बुन्देलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

अभिषेक ओझा

M.A. (English), M.Ed.

अवसेरी के किस्से: बुन्देली चटखारे

डॉ. राजीव अग्रवाल

अभिषेक ओझा

©सर्वाधिकार सुरक्षित

E-Book: संस्करण: जुलाई, 2026

मूल्य: ₹ 99

ISBN: 978-93-5917-896-7

प्रकाशक:

अभिषेक ओझा
फलगो चौरिहा का पुरवा, अतर्रा ग्रामीण,
बाँदा- 210201
(उत्तर प्रदेश)

मो. – **6306627341**
E-mail: mr.abhiojha@gmail.com

प्राक्कथन

बुंदेली लोक-चेतना के संवाहक 'अवसेरी': वाक्-चातुर्य, मन-बिज्ञान अउर सामाजिक यथार्थ

उपोद्घात (भूमिका)

बुंदेलखंड की या पावन अउर अचल धरती सिर्फ बीर-बाँकुरन की जननी नहीं आय, बल्कि इहाँ के लोक-साहित्य, चतुरई, हास-बिलाद अउर जीवंत लोक-चरित्रन का भी अथाही खजाना आय। चित्रकूट जिला के ऐतिहासिक गाँव 'रसिन' की माटी से उपजा एक अइसने कालजयी, गजब अउर लोक-मानस मा गहरे पैठा भवा नाँव है— '**अवसेरी**'।

प्रस्तुत किताब मा बटोरी गइ अवसेरी की ये बारह कहानियाँ सिर्फ हँसी-ठट्ठा के साधारण किस्सा नहीं आंय, बल्कि ये उस समै के देहाती समाज, मनई के सुभाव, लोक-मर्यादा अउर बुंदेली वाक्-वैदग्ध्य (हाजिरजवाबी) का जीता-जागता इतिहास आंय। अवसेरी एक अइसन चरित्त (पात्र) आय जो अपनी 'प्रत्युत्पन्नमति' (तुरतै सटीक जवाब देब) अउर पैनी बुद्धि के बल पर कठिन से कठिन आफत का भी अपने पक्ष मा मोड़े की गजब छमता रखत रहा।

किस्सन का बुंदेली समाज के हिसाब से वर्गीकरण

1. व्यावहारिक बुद्धि अउर चतुरई

- **'बर्तनों का बच्चा' अउर 'न हींग लगी न फिटकरी':** ये कहानियाँ अवसेरी की उस तीखी चतुरई का देखावत हैं, जहाँ व समाज मा फैले लोभ, स्वार्थ अउर चालाकी का जवाब उन्हीं के तरक से देत है। "बर्तन के बच्चा होब अउर फिर मरि जाब" का जो किस्सा है, व बुंदेली लोक-मानस मा 'जैसे को तैसा' के सिद्धांत का बड़े नीक ढंग से सम्मुख राखत है।
- **'मटकी का रहस्य':** या कथा लालच अउर बाह्य तड़क-भड़क पर करारा प्रहार आय, जहाँ अवसेरी ऊपर-ऊपर जमे घी की परत के नीचे माटी भर के चतुर कहावे वाली गनिका (नर्तकी) के लालच का निरुत्तर कर देत है।

2. लोक-न्याय अउर जन-मनोविज्ञान

- **'बतासे का न्याय':** एक बाहरी मनई के घमंड का तोड़े अउर ओका रसिन गाँव की महिमा बतावे काजें अवसेरी ने सिर्फ एक बतासे अउर बच्चा के मन का भांप के जउन न्याय करवावा, व इ बात का सिद्ध करत है कि लोक-अदालत मा न्याय सूखी दलील से नहीं, बल्कि मौके की समझ से होत रहा।
- **'सबके पेट होते हैं':** जमींदार के हियाँ न्योता (तदगरा) मा नाँव छूट जाब अउर ओसे उपजे रोष का अवसेरी ने जिस तरह से बारात रुकवाए मा बदला, अउर बाद मा "सबके

पेट होते हैं" जइसन अकाट्य सच कहिके बात सम्हाली, व उनके बोली के एकाधिकार अउर जन-संवाद की गजब कला का उज्यारा आय।

3. अमर्यादित हास्य अउर सामाजिक त्रासदी

- **'मजाक की भारी कीमत':** या कहानी पूरे संकलन का सबसे गंभीर अउर मर्मस्पर्शी हिस्सा आय। ई हास्य के उस डरावने मोड़ का देखावत है, जहाँ एक अनियंत्रित अउर अमर्यादित मजाक (भाई-बहिनी का प्रसंग) कुल की मर्यादा का ठेस पहुँचा के एक स्त्री के आत्मबलिदान (कुआँ मा कूदब) जैसी अनहोनी का कारन बन जात है। ई अवसेरी के भीतर छिपे पछतावा अउर आत्म-ग्लानि वाले गंभीर पक्ष का भी सामने लावत है।
- **'अवसेरी अउर भोर का संवाद' अउर 'निराला स्नान':** ये प्रसंग देहाती अंचल की लोक-लाज, तिरिया-पुरुख संवाद की सीमा अउर उ मर्यादा के उल्लंघन से पैदा भवे तात्कालिक कौतुक का साहित्यिक रूप मा दरसावत हैं।

4. अटूट आस्था अउर आध्यात्मिक निष्ठा

- **'आस्था की जीत':** या कथा अवसेरी का सिर्फ एक मज़ाकिया या चतुर संसारी होबे के भ्रम का समूल नष्ट करत है। केदारनाथ की कठिन यात्रा मा कतनों बिपत्ति अउर देह की लाचारी के बाद भी उनकी निश्चल, हठयोग जैसी भक्ति अउर महादेव का साक्षात सुपना मा दर्शन देब, उनके चरित्त के सात्विक अउर पावन रूप का बड़प्पन देत है।
- **'मंदिर की छत पर ऊँट' अउर 'कुआँ संदेश':** कला के घमंड (नर्तकी का ऐंठ) का अपनी जुक्ति से ढीला करब अउर समाज के रोज-रोज के एकै सवाल से तंग आके कुआँ मा जंजीर के सहारे लटक के सबहिन का एकमुश्त "एक सौ दस का लाया हूँ" का संदेसा देब, उनकी अनूठी 'प्रतिरोध कला' का नमूना आय।

उपसंहार (निष्कर्ष)

आखिर मा, अवसेरी का चरित्त बुंदेली लोक-चेतना का व साफ दर्पन (आईना) आय जिसमें बुद्धिमत्ता, हास्य, ब्यंग्य, निश्छलता अउर सामाजिक सजगता के सतरंगी रंग एक साथ लौकत हैं। यह किताब इन हेराए (विस्मृत) होती लोक-कथाओं अउर वाचिक परंपरा का कागद मा उकेर के सहेजने अउर अवसेरी के विदूषक से 'लोक-नायक' बनने की या यात्रा का अकादमिक अउर साहित्यिक पटल पर स्थापित करने का एक बड़ो अउर सराहनीय प्रयास आय।

"बुद्धिर्यस्य बलं तस्य"— यानी जेके पास बुद्धि है, असल मा बल भी ओही के पास है, अउर हमार अवसेरी दादू इ कहावत के साक्षात परतीक आंय।

- डॉ.राजीव अग्रवाल
- अभिषेक ओझा

विषय सूची

क्र. सं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1	बर्तन के बच्चे	1-2
2	बतासे का न्याय	3-4
3	मज़ाक की भारी कीमत	5-6
4	ऊँट मंदिर की छत पर!	7-8
5	सबके पेट होते हैं!	9-10
6	खटोली से केदारनाथ : सच्ची आस्था	11-12
7	न हींग लगी न फिटकरी	13-14
8	अवसेरी का 'कुआँ संदेश'	15-16
9	चुप्पा से दुहबो, ठाठ से खाबो	17
10	दूल्हा राजा का निराला स्नान	18-19
11	सूखी रोटी और शक्कर को सुवाद	20-21
12	ऊपर घी, नीचे माटी: तेजनिया खाँ चाटी	22-23

1. बर्तन के बच्चे

चित्रकूट के लगे **रसिन** गाँव में एक **अवसेरी** नाम को मनई अपनी लुगाई के संगे रहत हतो। बिचारे के कौनों लइका-बच्चा नहीं हते। अवसेरी एक सीधा-सादा किसान हतो, पै ओ खा पहलवानी को भारी शौक हतो। अवसेरी को सुभाव ऐसो हँसमुख और मिलनसार हतो कि गाँव में कौनों भी छोटो-बड़ो काम होवे, ओ खा न्योतो जरूर दओ जात हतो। वोऊ हर काऊ के काम में खूब बढ़-चढ़ के हाथ बँटात हतो। ई चक्कर में अवसेरी और ओ की लुगाई हर काऊ के जेवनार (दावत) में प्रेम से खात-पीत हते।

एक दिन गाँव के लोगन ने कहो, "अरे भाई अवसेरी! तुम सब जघा को जीमत (खात) फिरत हो, कभूँ हमेंऊ तो न्योतो खवाओ।" पहले तो वो टाल-मटोल करत रओ, पै जब लोगन ने जादा उलाहना दओ तो वो बोलो, "ठीक है भैया, खवा देहूँ।" उसने एक दिन पक्का कर दओ और सब खा न्योतो दे दओ।

गाँव की रीत के हिसाब से, जिस के घरे कार्यक्रम होत हतो, ओ खा गाँव भर से बर्तन-भाँड़े और सामन मिल जात हतो। लोगन ने खुशी-खुशी अपने बर्तन और सामन अवसेरी के घरे पहुँचा दओ। सबने मिल-जुल के राँधो-खायो और खूब मौज करी।

जब लोगन ने भोजन की तारीफ करी, तो अवसेरी हँस के बोलो, "**खाये रओ, सब तुम्हारई आय।"**

कछू दिन बाद जब वो बर्तन लौटावे गओ, तो उसने हर बड़े बर्तन के संगे एक छोटो सो बर्तन (कटोरी या लुटिया) लगा के दे दओ। लोग अचंभे में पड़ गये और बोले, "भैया अवसेरी, हमने तो तुखा बड़ो बर्तन दओ हतो, जो छोटो सो कहाँ से आ गओ?"

अवसेरी बड़ी गम्भीरता से बोलो, "**भैया, जे तुम्हारे बर्तन को बच्चा आय।"**

गाँव के लोग बड़े राजी भये। बर्तन को बच्चा पा के उन खा बड़ी खुशी भई।

कछू साल गुजर गये। लोगन के मन में फिर लालच जागी, बोले, "अवसेरी भाई! एक बार फिर वैसी ई जेवनार हो जाय। पिछली बार को जीमबो बहुत नीक हतो।" अवसेरी बोलो, "जब तुम्हारी इतनी ई इच्छा है, तो हुई जाय एक बार। सब तुम्हारे पंचन को आय।"

फिर दिन तय भओ। गाँव वालों ने पिछले 'बर्तन के बच्चों' खा याद करके, एक की जघा दो-दो बर्तन अवसेरी खा दे दये। गाँव में एक **भोंदू कलार** हतो, ओ के पास बहुत सो सामन रहत हतो। अवसेरी ने का करो कि गाँव वालों के सब बर्तन भोंदू कलार के पास गिरवी धर दये और ओ के बदले आटा, भाँटा (भँटा), तेल, घी, नून-मर्चा सब ले आयो।

गाँव भर ने छक के भोजन करो। अवसेरी फिर ओई बात बोलो, "**मजे से खायो भैया, सब तुम्हारई आय।"**

दावत के कई दिन बीत गये। लोग बाट जोत रहे हते कि अब बर्तन आयेंगे और संगे 'बच्चा' भी अइहै। हफ्ता बीते, महीना बीते, पै बर्तन नहीं आये। जब लोग तंग आके अवसेरी के घरे पहुँचे और बोले, "भैया! हमारे बर्तन तो लौटा दो। पिछली बार तो बच्चा दओ हतो, ई बार तो तुम असल बर्तनई दबा के बैठ गये हो।"

अवसेरी मुँह लटका के बोलो, "**का बतायें भैया, ई बार ऐसो रोग (बिमारी) अई कि महतारी और बच्चा (बड़ो बर्तन और छोटो बर्तन) दोनों ई चल बसे!**"

गाँव वाले चकरा गये, बोले, "अरे! बर्तन कभूँ मरत हैं का?"

तब अवसेरी ने पते की बात कही, "**भैया, अगर बर्तन बच्चा जन सकत हैं, तो वे मरऊ तो सकत हैं!**"

अब गाँव वालों खा सारा माजरा समझ में आ गओ। जब उनने बहुत बिनती करी तो अवसेरी हँस के बोलो, "**भैया, वो सब सामान तो तुम्हारे पंचन के पेट में चला गओ। अब अगर बर्तन चाने होयें, तो भोंदू कलार के पास जाओ और रुपया भर के अपने-अपने बर्तन छुड़ा लाओ।**"

गाँव के लोग सर पकड़ के रह गये, बोले, "**दद्दा! इसने तो हमारे ई बर्तन बेच के हमें खवा दओ!**"

वा दिन के बाद से, रसिन गाँव में कभूँ काऊ ने अवसेरी से न्योतो नहीं माँगो।

2. बतासे का न्याय

चित्रकूट के **रसिन** गाँव के **अवसेरी** दद्दा बड़े विलक्षण बुद्धि के मनई हते। उनकी अकल इतनी तेज चलती हती कि सामने वारो चकरा जाय। उन दिना आज के जैसे मोटर-गाड़ी तो हती नहीं, सो लोग घोड़ा-घोड़ी पालत हते। अवसेरी के पासऊ एक देशी घोड़ी हती, जेखा वे प्यार से **'ग्वेद'** कहत हते।

एक दिन सबरे-सबरे को बखत हतो। अवसेरी गाँव के बाहर अपनी घोड़ी के लाने घास छील रहे हते। ओई बखत गाँव से एक परदेसी जोड़ा (स्त्री-पुरुष) निकरो। पुरुष आगे-आगे चल रहा हतो और मेहरिया (पत्नी) पीछे-पीछे, जिसकी कोरा (गोद) में एक छोटो सो लइका हतो।

रस्ते में वो पुरुष अपनी लुगाई से बोलो, "**सुनो ओ फलनिया! सब कहत हते कि रसिन गाँव के लोग बड़े ठिठोलिया (मजाकिया) होत हैं। हम तो पूरो गाँव निकर आये, पै काऊ ने हमसे कछू मजाक ई नहीं करो।**"

पास में घास छीलत अवसेरी के कान में जा बात पड़ गई। वे मनई मन मुस्कराये और बोले, "**हओ भैया! अभी बतात हैं तुम्हें रसिन को मजाक।**"

अवसेरी ने तुरंत घास छीलवो बंद करो और दौड़ के **भोंदू कलार** की दुकान से मुट्ठी भर **बतासे** खरीदे और उन लोगन के पीछे हो लिये। लइका अपने बाप के कँधे पे हतो और ओको मुँह पीछे की ओरी हतो। अवसेरी ने चुपके से एक बतासा लइका के हाथ में थमा दओ, लइका गप से खा गओ।

फिर दूसरो दओ, फिर तीसरो। ऐंसे ई बतासा खवाते-खवाते एक कोस को रस्तो कट गओ।

जैसे ई **सुदिनपुर** गाँव आयो, अवसेरी ने पैंतरा बदलो और जोर-जोर से चिल्लावे लगो, "**अरे दौड़ो रे भैया! देखो जे मुआ मेरी मेहरिया और लइका खा भगाये लिये जा रहा है!**"

सुनत ई सुदिनपुर के लोगन ने उनखा घेर लओ। मजमा लग गओ और पंचायत बैठ गई। पंच बोले, "**अरे ओ मुसाफिर! जे का अनर्थ कर रहे हो?**"

वो बिचारो हक्का-बक्का रह गओ, बोलो, "**अरे नहीं सरकार! जे मेरी अपनी लुगाई है, जे मनई झूठ बोल रहा है। आप ई मोरी मेहरिया से पूछ लो।**"

पंचन ने मेहरिया से पूँछो, "तुम को की लुगाई हो?" वा बोली, "सरकार! मैं इन्हीं की पत्नी हूँ और इन्हीं के संगे जा रही हूँ।"

जा सुन के अवसेरी दहाड़ मार के रोवे लगो और बोलो, "**अरे ओ प्रिये! जे का कह रही हो? अरे थोरि-बहुत अनबन तो हर पति-पत्नी में होत है, पै ऐंसे पराये मनई के संगे भागबो कहाँ को न्याय है? पंच परमेश्वर! देखो जे मोरी लुगाई कैसी ढोंग कर रही है, मैं तो लुट गओ, बर्बाद हो गओ!**"

अवसेरी को रोबो देख के पंचऊ सोच में पड़ गये। कोई फैसला नहीं हो पा रहा हतो। आखिर में पंचन ने कहो, "**देखो भाई! मनई तो झूठ बोल सकत है, पै छोटो लइका कभूँ झूठ नहीं बोलत। जे लइका जेके पास जैहे, जीत ओई की होई।"**

एक ओरी उस मुसाफिर खा बैठा दओ और दूसरी ओरी अवसेरी खा। बीच में लइका खा छोड़ दओ। जैसे ई लइका छोड़ो गओ, अवसेरी ने धीरे से हाथ में **बतासा** दिखा दओ। लइका तो बतासे को चस्का लगो ई हतो, वो झट से दौड़ के अवसेरी की कोरा में जा बैठो और चिपट गओ।

पंचन ने फैसला सुना दओ— "**लइका अवसेरी को आय, सो लुगाई भी अवसेरी की भई।"**

अब तो वो परदेसी जोड़ा रोवे-गिड़गिड़ावे लगो, "दद्दा! जे का गजब कर रहे हो? राम की सौंह जे मोई परिवार है।"

जब अवसेरी ने देख लओ कि उनखा अपनी गलती को अहसास हो गओ है, तो हँस के बोले, "**जाओ भैया! अपना लइका लो और अपनी लुगाई। पै अब आगे से कभूँ जे मत कहियो कि रसिन के लोग मजाक नहीं जानत! जे तो बतासे को न्याय हतो।"**

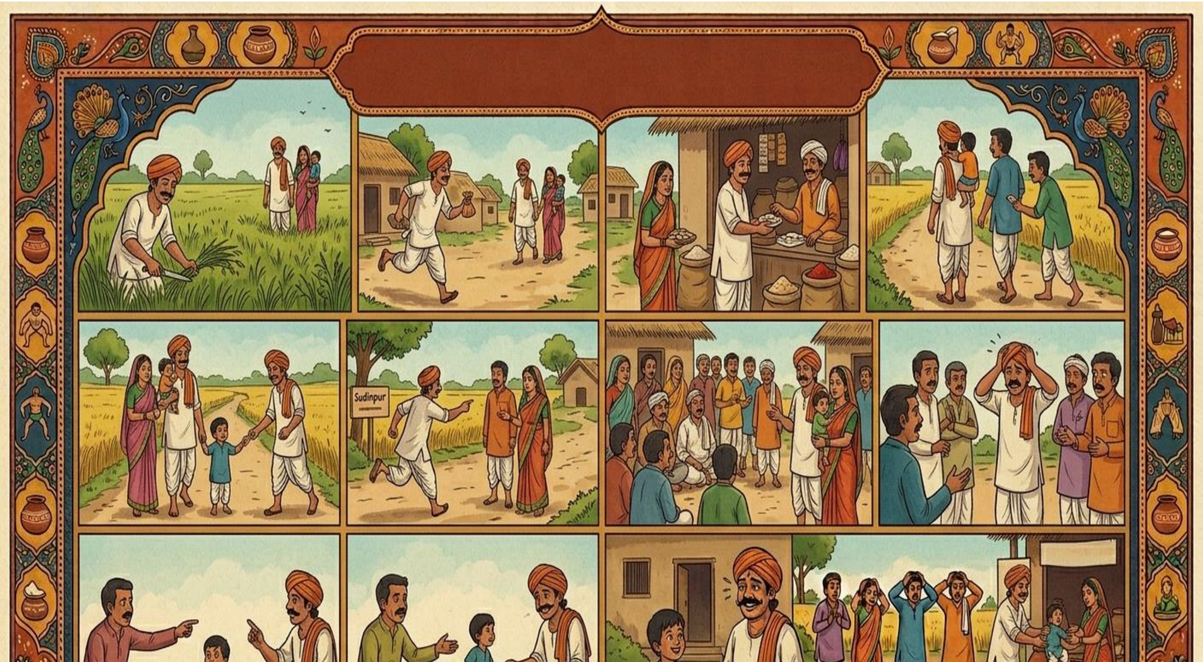

सब लोग अवसेरी की चतुराई देख के दंग रह गये और वो जोड़ा कान पकड़ के अपनी राह लगो।

3. मजाक की भारी कीमत

रसिन गाँव के अवसेरी के किस्से तो दूर-दूर तक मशहूर हते। उनकी चतुराई और हाजिरजवाबी को हर कौई कायल हतो। एक दिन अवसेरी की लुगाई (पत्नी) बोली, "देखो दद्दा, तुम दुनिया भर से तो ठिठोली करत फिरत हो, पै हमसे कभूँ मजाक नहीं करो। हमेंऊ तो कभूँ अपनी चतुराई चखाओ।"

अवसेरी ने पहले तो बात टारी, पै जब लुगाई पीछे ई पड़ गई, तो बोले, "हओ! ठीक है, कभूँ देखिहैं।"

कछू दिन बीते, अवसेरी को सारो (साला) अपनी बहिन खा लिवावे (विदा कराने) गाँव आयो। लुगाई तो मजाक वाली बात भूल-भाल गई हती। भैया को खूब आदर-सत्कार भओ, नीक जेवनार भई।

सब काम से निपट के अवसेरी अपने सारे खा बाहर ले गओ। सारो देख के बोलो, "जीजा, तुम इत्ते सुखान-सुखान (दुबले) काहे लगत हो? का बात है?"

अवसेरी मुँह बना के बोले, "का बतायें भैया, एक चुड़ैल है जो रोज रात के हमें तंग करत है। हमारे संगे सोबे खा आफत मचात है। हम बहुतै मना करत, पै वो मानतई नइयाँ।"

सारो पहलवानी के जोश में बोलो, "अरे जीजा! ऐसी कैसी चुड़ैल? आज हमें देखन दओ, हमारी पहलवानी कबे काम अइहै? आज रात हम सम्हार लेहैं।"

रात भई, तो अवसेरी ने अपनी जघा अपने सारे खा पलंग पे लिटा दओ और बोले, "तुम ओढ़-पैर के सो जाओ, जब वो चुड़ैल अइहै, तब तुम ओखा मजा चखा दइयो।" सारो चादर तान के सो गओ और अवसेरी चुपचाप अंधेरे में छुप के बैठ गओ।

गाँव की रीत के हिसाब से, अवसेरी की लुगाई घर को सब काम-धाम निपटा के, चौका-बर्तन माँज के देर रात सोने अई। बिचारी थकी-हारी हती, अगले दिन मायके जानो हतो। अंधेरे में ओखा का पता कि चादर के भीतर पति है कि भाई। उसने जा के अपने पति के (जो असल में भाई हतो) पैर दबावे शुरू करे, सेवा करी और थक के बगल में लेट गई।

जैसेई वो लेटी, अवसेरी अंधेरे से कूद के बाहर निकरो और जो-जो से चिल्लावे लगो, "**अरे गजब हो गओ! घोर कलयुग आ गओ! देखो रे देखो, बहिन अपने भाई के संगे लेटी है! मैं तो बर्बाद हो गओ!**"

शोर सुन के दोनों ने चादर हटाई और जब एक-दूसरे खा देखो, तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। दोनों अवाक रह गये।

तब अवसेरी हँस के बोलो, "**अरी भाग्यवान! तुमी तो कहत रई कि हमसे कभूँ मजाक नईं करत, सो आज कर लओ मजाक!**"

जब अवसेरी ने पूरी बात बताई, तब जाकर मामला समझ में आयो। सारो तो लज्जा के मारे दूसरे कमरे में चलो गओ। लुगाई के मन में भारी चोट पहुँची। वो बोली, "भला ऐसो भी कौनों मजाक होत है का?" पै वो जादा कछू कह नईं पाई, काये से मजाक की मांग ओई ने करी हती।

पै वा रात के बाद सब कछू बदल गओ। अवसेरी की लुगाई अपने भाई और पति से आँख मिलाबे लायक नईं बची। लोक-लाज और सरम के मारे वो भीतर ई भीतर घुटन लगी। ओ की अंतरात्मा ई बात खा सह नईं पाई। एक दिन मौका देख के, वो घर के बाहर बने कुआँ में कूद गई और अपनी जान दे दई।

हँसी-मजाक में दओ गओ घाव, कभूँ-कभूँ हत्या से भी जादा गहरा होत है।

4. ऊँट मंदिर की छत पर!

एक समई की बात आय, एक रजवाड़ी गाँव हतो जहाँ पुरानी स्टेट हती। उते के ज़मींदार साहब (जिन्हें सब **धतुरहा** कहत हते) के घरे एक भौत बड़ो जलसा हतो। जलसा में नाच-गाने को भी इंतजाम करो गओ हतो। पासई के एक छोटे से पुरवा, फैजाबादपुर से नर्तकियाँ (नचनियाँ) बुलाई गई हतीं।

रात खा महफ़िल सजी। नाच शुरू भओ तो गाँव भर के लोग टुट पड़े। भीड़ में हमाये **अवसेरी** दद्दा भी हते। दिन भर खेती-पाती को काम करके थके-हारे, वैसेई मैले-कुचैले कपड़ा पहने वे भीड़ में जाके बैठ गये।

गाँव की रीत हती कि जेखा नाच नीक लग जात हतो, वो नचनिया खा ईनाम के पइसा दिखाउत हतो। नचनिया नाचत-नाचत पास आके वे पइसा उठा लेत हती। अवसेरी खा नाच भौत पसंद आयो, सो उनने भी पइसा दिखाए। पै नचनिया हती थोड़ी ऐंठ वाली; अवसेरी के गंदे कपड़ा और साधारण रूप देख के वा अनदेखो कर गई और पइसा लेवे नहीं अई।

जा बात अवसेरी खा भीतर तक चुभ गई। उनने मन-ही-मन कहो, "**रहि जाये ससुरी! अबे तू मोरे पाछे-पाछे फिरिहै, देख तो जा।**"

वा जवाने में आवे-जावे खा हाथी, घोड़ा और ऊँटई चलत हते। वे नचनियाँ ऊँट पर चढ़ के आई हतीं। अवसेरी ने सोची कि ई नचनिया को घमंड तो चूर करनेई पड़े। रात खा जब सब सो गये, तब अवसेरी चुपचाप उठे और कछू लोगन की मदद से गाँव के बाहर मंदिर के पास **पयार (पुआल)** के भौत सारे गट्ठर इकट्ठे करे। उनने पयार लगा-लगा के मंदिर की छत तक एक ढलान (रैंप) बना दई। फिर का हतो, ऊँट खा पुचकार के वा ढलान के सहारे मंदिर की छत पर चढ़ा दओ और बाद में सब पयार हटा दई।

सबेरे जब नाच-गानों निपटा, तो नचनिया ने अपने आदमी से कहो, "भैया, ऊँट ले आओ, अब घरै चलने।" पै ऊँट उते होवे तब तो मिले! खोजबीन शुरू भई तो सब टकटकी लगा के देखत रह गये—**ऊँट तो मंदिर की ऊँची छत पर ठाढ़ो हतो!**

पूरो गाँव इकट्ठा हो गओ। सब चकरा गये कि ऊँट उते पहुँचो कैसे? तभी एक सयाने (बुजुर्ग) बोले, "जा कारस्तानी तो सिर्फ़ अवसेरी की ई हो सकत है।"

अवसेरी खा बुलवाओ गओ। अवसेरी ने पूरी बात बताई कि कैसे वा नचनिया ने अपनी ऐंठ के मारे ईनाम के पइसा नहीं लये हते। जब नचनिया से पूछो गओ, तो वा ने अपनी गलती मान लई। गाँव वाले भी अवसेरी की तरफ हो गये।

अवसेरी डंके की चोट पे बोलो, "**अगर जा पतुरिया एक दिन और एक रात मोरे संगे रहे, तबई मैं ऊँट नीचे उतारहूँ।**"

नचनिया खा हार माननी पड़ी। वा रुकी और अपनी गलती की माफी माँगी। तब जाके अवसेरी ने फिर से पयार के गट्ठर लगवा के ढलान बनाई और ऊँट खा सुरक्षित नीचे उतारो।

वा दिन के बाद से वा नचनिया ने कभूँ महफ़िल में काऊ गरीब को नीचा नहीं दिखाओ।

ऐसो हतो हमाओ अवसेरी—बुद्धि को तेज और स्वाभिमान को पक्को!

5. सबके पेट होत हैं!

एक बेर की बात आय, रसिन गाँव के ज़मींदार साहब की बिटिया को व्याह हतो। गाँव की रीत के हिसाब से सबरे गाँव खा न्योतो दओ जानो हतो। उन दिना न्योता की एक चिट्ठी बनत हती, जिख़ा **'तदगरा'** कहो जात हतो। ओमें गाँव के हर मनई को नाम लिखो जात हतो। पंडित जी घर-घर जाके नाम पुकारत हते और न्योतो देत जात हते।

पै ई बेर का भओ कि गलती से **'अवसेरी'** को नाम तदगरा में लिखबे से छूट गओ। जब अवसेरी खा न्योतो नहीं मिलो, तो वो भारी खिसिया गओ। उसने मनई-मन ठान लई कि आज तो ज़मींदार खा सबक सिखानेई है।

बान गंगा पे 'रायता'

साँझ के टेम जब बरात आबे वाली हती, अवसेरी अपनी घोड़ी पे चढ़के गाँव के बाहरे **बान गंगा नदी** के किनारे पहुँच गओ और उते अपनी घोड़ी खा घास छीलने लगो। उन दिना जा प्रथा हती कि बरात नदी किनारे रुकके हाथ-मुँह धोत हती, कपड़े बदलत हती और फिर जनवासे की ओर बढ़त हती।

जैसेई बरात नदी किनारे पहुँची, अवसेरी ने बरातियों से गप्प-सप्प शुरू कर दई। वो पूछन लगो, "कहाँ जा रये हो भैया?" बराती बोले, "अमुक ज़मींदार के उते बिटिया को ब्याह है, उतेई जा रये।"

तब अवसेरी ने तिरछी मुस्कान के संगे चाल चली और बोलो, "**अच्छा! ओई बिटिया के ब्याह में जा रये, जेके पेट में है?**"

इतनी बात सुनतई बरातियों के तो कान खड़े हो गये। बात हवा की तान फैल गई और सबरे शंका में पड़ गये। सबने सोची कि अगर जा बात सच निकरी, तो हमारी तो हँसाई हो जै। बस, बदनामी के डर से पूरी बरात उते सेई वापस लौटे लगी।

ज़मींदार की घबराहट और पंचैती

जब खबर ज़मींदार तक पहुँची कि बरात उलटे पाँव लौट रई है, तो उनके तो हाथ-पाँव फूल गये। गाँव के सयाने और बुजुर्ग लोग तुरंत बरात के पाछे भागे और उन्हें रोक के पूछन लगे कि भइया, का बात हो गई जो पाछे जा रये हो?

पहले तो कोऊ कछू बतावे खा तैयार नहीं हतो, पै जब जादा कुरेदी गई, तो बरातियों ने दबी जबान से बताई, "हमें पता चलो है कि बिटिया के पेट है।" गाँव वालों ने अचरज से पूछो, "जा बात तुमा खा कोनो ने बताई?" बरातियों ने उतेई घास छील रहे अवसेरी की ओर इशारा कर दओ।

अब गाँव वालों खा माजरा समझ में आ गओ। वे समझ गये कि जे सब अवसेरी की करामात आय, काहे से ओको नाम तदगरा में नहीं हतो। ज़मींदार ने तुरंत अवसेरी ख़ा बुलवाओ और हाथ जोड़ के माफ़ी माँगी, "भैया अवसेरी, गलती हो गई जो नाम छूट गओ, पै जा गाँव की नाक को सवाल है। गाँव

की बिटिया सबरी गाँव की बिटिया होत है। जे रायता तुमेंई फैलाओ है, अब तुमेंई समेटने है। कछू ऐसो करो कि बिगड़ी बात बन जाय।"

अवसेरी को 'न्याय'

अवसेरी खा तुरंत नहलाओ-धुलाओ गओ, नये कपड़े पहनाये गये और बड़े मान-सम्मान के संगे बरात के पास भेजो गओ। उते पहुँच के अवसेरी बड़े भोले बनके बोलो, "**अरे भैया! काहे बरात लौटाये लिये जा रये हो?**"

बराती तुनक के बोले, "क्यों, तुमेंई ने तो कहो हतो कि बिटिया के पेट है?"

तब अवसेरी खिलखिला के हँसो और बड़ी चतुराई से बोलो, "**अरे मोर भोरे भइया! तनक सोचो तो—का दुनिया में कोऊ ऐसो मनई है जेके पेट न होवे? सबके पेट होत हैं, बिना पेट के कोऊ जनमत है का? फिर ओमें गलत का कह दओ हमने?**"

इतनी बात सुनतई बराती हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। उन्हें अपनी गलती को अहसास भओ कि उनने अवसेरी की बात को गलत मतलब निकाल लओ हतो। बरातियों ने ज़मींदार से माफ़ी माँगी और धूमधाम से बरात ज़मींदार की ड्योढ़ी पे चढ़ी।

वा दिन अवसेरी ने अपनी बुद्धि से बिटिया को घर बसवा दओ और अपनी चतुराई को डंका पूरे चित्रकूट में बजा दओ।

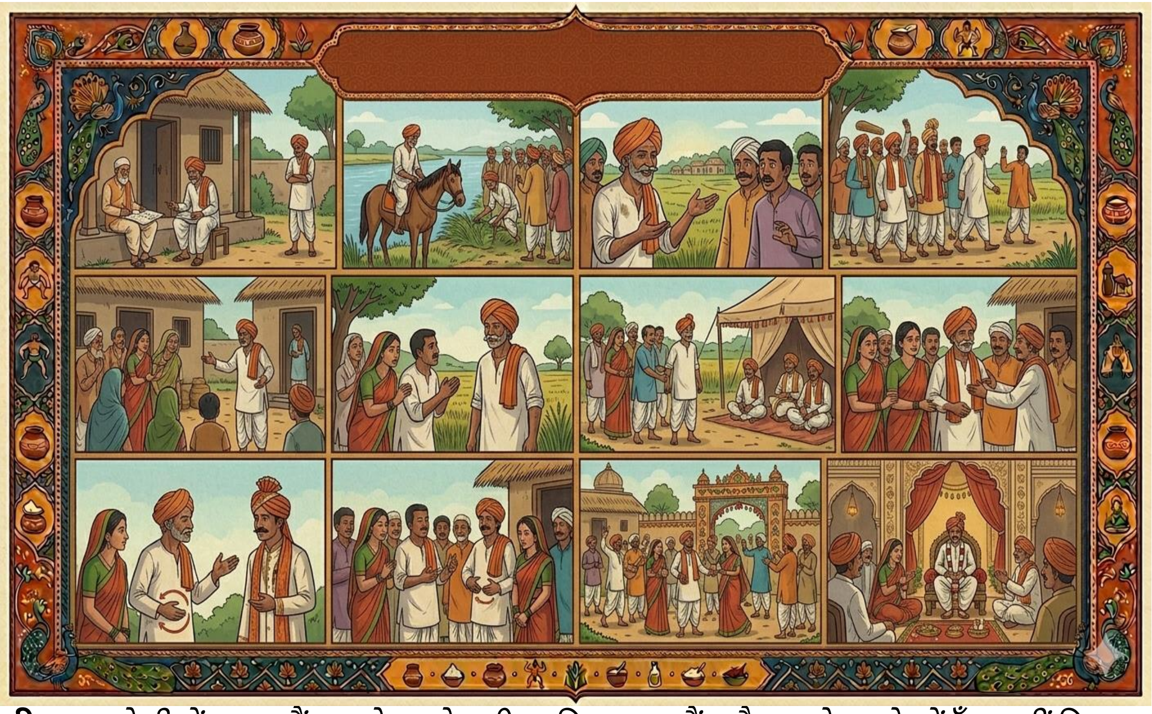

सीख: *बुन्देली में कहत हैं— "बोलत के थरिया बिक जात हैं, और न बोलत के गेंहूँऊ नहीं बिकत।" यानी बात बनाने की कला आनी चाहने!*

6. खटोली से केदारनाथ: सच्ची आस्था

एक बेर की बात आय, **रसिन** गाँव में चर्चा फैल गई कि सब जने मिलके तीरथ करबे चलें। जब जा बात **अवसेरी** ने सुनी, तो ओके मन मेंऊ हिलोरे उठने लगीं। बिचारो गरीब ब्राह्मण हतो, पै ओको भगवान पे अटूट भरोसा हतो। सो, वोऊ गाँव वालों के संगे तीरथ यात्रा पे निकर पड़ो।

खटोली की यात्रा

अभी यात्रा शुरूई भई हती और सब जने **रौली** गाँव पहुँचे हते कि अवसेरी की तबियत अचानक बिगड़ गई। गाँव के लोग बोले, "अरे अवसेरी भाई, अभी तो हम गाँव से तनकऊ दूर आये हैं और मंज़िल बहुत दूर है। तुमारी देह साथ नहीं दे रई, सो तुम उलटे पाँव गाँव लौट जाओ। जब नीके हो जइयो, तब कभूँ देख लीहे।"

पै अवसेरी तो धुन को पक्को हतो। वो बोलो, "**मैं तीरथ के लाने निकरो हूँ, अब पाछे पाँव नहीं धरहूँ, चाहे मोर प्रानई काहे न निकर जांय। तुम सब मोखा खटोली (पालकी) में धके लिवा चलो, तुमा खा भारी पुन (पुण्य) हुई। और जे तुम मोखा छोड़ दइहो, तो भगवान तुमा पे भारी खिसिहैं।**"

गाँव वालों ने आपस में राय करी और फिर बारी-बारी से कंधा बदल-बदल के अवसेरी खा खटोली पे बिठाके **केदारनाथ** तक ले गये।

दर्शन की तड़प

केदारनाथ पहुँच के सबने विधि-विधान से पूजा करी और भगवान के दर्शन पाये। पै अचंभे की बात जा भई कि सब खा तो दर्शन भये, पै अवसेरी खा कछू नहीं दीखो। वो बिचारो मंदिर की चौखट पे बैठके दहाड़ें मार-मार के रोवे लगो।

सब गाँव वाले दर्शन करके चले गये, पै अवसेरी उतेई डटो रओ। वो दिन-रात विनती करे— "हे प्रभु! मैं इतनी दूर से कष्ट सहके तुमारी सरन आयो हूँ, मोखा दर्शन काहे नहीं दे रये?"

पंद्रह-बीस दिन बीत गये। अवसेरी भूखा-प्यासा चौखट पे डटो रओ। एक दिन वो रोत-रोत भगवान से उलाहना देके बोलो— "**हे महाराज! जो दुनिया भर के ऊँचे-नीचे काम करत हैं, तुम उन खा तो तुरतै दर्शन दे देत हो। मोसे का ऐसी खता हो गई? का मैंने एक नीच जाति की कन्या से व्याह कर लओ, जेके लाने तुम मोसे रुष्ट हो? तुमारी नज़र में तो सब एक बराबर हैं। जब तक मोखा साक्षात दर्शन नहीं मिलिहैं, मैं इते से एक अंगुर नहीं खिसकहूँ। या तो दर्शन दओ, नहीं तो ई चौखट पे मोर प्रान निकर जैहें।**"

इतना कहत-कहत अवसेरी उतेई अचेत (बेहोश) होके गिर पड़ो।

ओई रात मंदिर के पुजारी खा सुपना (स्वप्न) आयो। साक्षात भगवान बोले— "**पुजारी! वो जो गरीब भक्त बाहरे चौखट पे परो है, ओखा आदर से भीतर ले आओ। वो मोर सच्चा भक्त आय, बिना दर्शन के वो इते से नहीं जैहे।**"

पुजारी की आँख खुली, मंदिर के पट बंद हते। उसने बाहरे जाके देखो तो अवसेरी बेहोश परो हतो। पुजारी ने ओके मुँह पे ठंडे पानी के छींटे मारे। जब अवसेरी खा होश आयो, तो पुजारी बोलो, "भैया, तुम बड़े भागसाली हो। साक्षात महादेव ने तुमारी पुकार सुन लई है। चलो, दर्शन के लाने तैयार हो जाओ।"

अवसेरी खा बढ़िया नहलाओ-धुलाओ गओ, नये कपड़े पहनाये गये और बंद मंदिर के भीतर ले जाके भगवान के **साक्षात साफ़ दर्शन** कराये गये। दर्शन पाके अवसेरी निहाल हो गओ। ओकी देह की सब पीर-पीड़ा (दर्द) और थकान छूमंतर हो गई।

गाँव वापसी

गाँव वालेऊ जा देखके भारी राजी भये कि उनकी खटोली ढोवे की मेहनत सफल हो गई। कछू दिन बाद अवसेरी खा फिर से खटोली पे बिठाके ससम्मान रसिन गाँव वापस ल्याओ गओ। गाँव पहुँच के जब अवसेरी ने अपनी आपबीती सुनाई, तो सबरे गाँव के लोग ओके पाँव छुवे लगे।

सब बोले— "**धन्य हो अवसेरी भाई! तुमने तो रसिन गाँव को नाम ऊँचो कर दओ। सांची श्रद्धा और धीरज होवे, तो भगवान खा पसीजनेई पड़त है।**"

सीख: *बुन्देली में कहत हैं— "जेके मन में खोट नहीं, ओखा भगवानऊ दूर नहीं।"*

7. न हींग लगी न फिटकरी

एक बेर की बात आय, एक **औछवाला** गाँव में **पीढ़िया** नाम के एक पंडित जी (ब्राह्मण) रहत हते। उनके पास एक बढ़िया हट्टो-कट्टो **पड़वा** (भैंस को बच्चा) हतो। अवसेरी की नज़र वा पड़वा पे पड़ गई, सो वो पंडित जी के पास पहुँचो और बोलो—

"दादू! हमारे पास गाय-बछिया कछू नइयाँ। जो तुमारो पड़वा है, सो मोखा दे-दओ। मैं ओखा नीक जघा रखहूँ, ओकी सेवा करहूँ और जब वो बिकबे लायक हो जै, तब ओखा बेच के जोऊ कछू मुनाफा हुई है, ओमें आधो-आधो बाँट लेहूँ।"

पीढ़िया दादू सीधे मनई हते, सो वे अवसेरी की बातन में आ गये और पड़वा ओखा सौंप दओ। अवसेरी ने का करो कि पड़वा लेतई खने, ओई दिन साँझ के ओखा **बीस आना** में ठिकाने लगा दओ (बेच दओ)।

पंद्रह-बीस दिन निकल गये। पीढ़िया दादू के मन में आई कि चलें देख के आयें कि पड़वा कतनो बढ़ गओ। वे अवसेरी के द्वारे पहुँचे और पूछे—

"अरे अवसेरी दादू! पड़वा मजे में है? कछू हट्टो-कट्टो भओ कि नइयाँ?"

अवसेरी मुँह बिचका के बोलो— "अरे का हट्टो-कट्टो हुई! ओखा तो कसाई (मुसलमान) ले गये, सो उनने ओखा खा-पी के हगऊ डारो! ससुरे, अब तुम अपनी रकम ले लो।"

पीढ़िया दादू हक्का-बक्का रह गये, बोले— "अरे! केतने में बेच दओ?"

अवसेरी बड़ी शांति से बोलो— "बीस आना में बेच दओ। हमनें सोची कि का भरोसा कब मर-खप जाय, सो ओई दिन साँझ खा ठिकाने लगा दओ।"

इतनी बात कह के अवसेरी ने अपनी जेब से **दस आना** निकाले और पीढ़िया दादू के हाथ पे धर दये।

पीढ़िया दादू चिल्लाने लगे— "अरे यार! जे का अनर्थ है? एकई रात में आधो रुपया कम कर दओ?"

तब अवसेरी हँस के बड़ी चतुराई से बोलो— **"अरे दादा! अपनी बात का भई हती? जे तय भओ हतो कि जोऊ मोल हुई है, ओमें बटाई हुई (आधो-आधो)। सो बीस आना में से दस तुम्हारे और दस हमारे। हिसाब बिलकुल साफ़ है!"**

बिचारे पीढ़िया दादू मुँह देखते रह गये और अवसेरी ने बिना एक कौड़ी लगाये, दूसरे को पड़वा बेच के दस आना अपनी जेब में धर लये।

सच कई गई है— **"न हींग लगी न फिटकरी, और रंग चोखोई-चोखो।"** अवसेरी के ठाठ ई तान हते!

8.अवसेरी का 'कुआँ संदेश'

एक बेर की बात आय, अवसेरी कछू दूसरे गाँव से एक बैल मोल (खरीद) के ल्याओ। बैल देखबे में बहुतई सुघर और हट्टो-कट्टो हतो। अवसेरी ओखा लइके जैसेई अपने गाँव की डगर पे बढ़ो, जोऊ देखत उहें पूछन लगत—

"**अरे भैया अवसेरी! बड़ी नीक जोड़ी को बैल है, केतने को ल्याये?**"

अवसेरी हँस के बोलत— "**भैया, एक सौ दस को ल्याये हैं।**"

तनक आगे बढ़ो तो दूसरो मनई मिल गओ, वोऊ पूछन लगो— "अरे दद्दा, बैल तो भारी सुंदर है, केतने को दओ?" अवसेरी फिर बोलो— "**भैया, एक सौ दस को ल्याये हैं।**"

अब भओ जा कि रस्ता भर जेइ चकर चलत रओ। गाँव पहुँचत-पहुँचत दस-पंद्रह जने वही सवाल पूछ चुके हते और अवसेरी ऊब गओ हतो।

कुआँ में छलांग

अगले दिन अवसेरी खौरिया (गाँव का एक हिस्सा) गओ। उते हनुमान जी के मंदिर के लगे एक पुरानो कुआँ हतो। अवसेरी ने का करो कि अचानक कुआँ में छलांग लगा दई! जैसेई खबर फैली कि अवसेरी कुआँ में कूद गओ है, पूरे गाँव में हड़कंप मच गओ।

लोग दौड़त-भागत कुआँ के पास पहुँचे और रोवे-पीटने लगे— "**अरे मोर बाप! अवसेरी भैया तो बड़ो नेक मनई हतो, ई खा का हो गओ!**"

कुआँ में एक पुरानी जंजीर लटक रही हती, अवसेरी ओई जंजीर खा पकड़ के बीचई में लटक गओ हतो। लोग ऊपर से चिल्लाये— "**अरे अवसेरी! जिंदा हो कि मर गये? काहे कूद गये भैया?**"

कुआँ के भीतर से गुंजायमान आवाज आई— "**हाँ भैया! हमाओ मरो निहाय, हम तो जिंदा हैं!**"

असली संदेश

गाँव वाले अचंभे में पड़ गये, बोले— "तो फिर भीतर का कर रये हो? बाहर आओ!"

तब अवसेरी ने कुआँ के भीतर से चिल्ला के कहो— "**सब जने कान खोल के सुन लो! हम बैल 'एक सौ दस' को ल्याये हैं! रोज-रोज सब अलग-अलग पूछत फिरत हते, तो हमने सोची कि आज कुआँ में कूद के गाँव भर खा एकई बार में बता दें, ताकि फिर कोऊ न पूछे!**"

इतनी बात सुनतई, ऊपर खड़े सबरे गाँव वाले हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। सब समझ गये कि अवसेरी ने बैल की कीमत बतावे को जे अनोखो और मज़ेदार तरीको निकालो हतो।

यौ हतो हमार अवसेरी को '**कुआँ संदेश**'।

सीख: *बात एकई हती, पै बतावे को अंदाज़ अवसेरी जैसो हतो!*

<u>9. चुप्पा से दुहबो, ठाठ से खाबो</u>

रसिन गाँव में **शुक्ला जी** को बहुत बड़ो घर हतो। उनके दुआरे पे दो-चार नीकी गाय-भैंसें बँधी रहत हती। **अवसेरी** का करत हतो कि जबई ओखा मौका मिलत, वो चुप्पा से शुक्ला जी के खोर में घुस जात और गैया-भैंसिया दुह के ले आत।

अब बात जा हती कि अवसेरी के पास तो कौनों गोरु-बछेरू (पशु) हते नईं, सो वो ई जुगाड़ में रहत हतो। जबई ओको मन दूध पिये को होत, घर से बाल्टी या लोटिया उठात और काऊ की भी गैया दुह के अपनी प्यास बुझा लेत।

एक दिन काऊ ने देख लओ और टोको, "अरे अवसेरी भाई! जे का कर रये हो? बिना पूछे दूध दुह रये!"

तब अवसेरी लजाने के जघा उलटे ओई पे चढ़ बैठो और बोलो, "**अरे! तुखा लाज-सरम नईं आउत जो ऐसो कह रये? का मैं भूखो-पियासो सूख के हड्डी हो जाऊँ और मर जाऊँ? तुखा दया नईं आउत? अरे, तुम पंचन खा तो चाहने हतो कि मोखा सेर-सेर भर दूध अपने मन से दे दइयो, पै तुम सब तो दूध-घी उड़ा रये और मैं सूखी रोटी खाऊँ? ऐसो नईं हो सकत!**"

वो सीना ठोक के कहत हतो, "**अगर तुम गाँव में गाय-भैंस रखिहो, तो अवसेरी भी दूध-घी खइहै। हमाओ हक़ है!**"

ऐसे हते हमाये अवसेरी दद्दा! वे जबरई लोगन के घरे दूध-घी खात-पीत हते, पै उनके सुभाव के मारे कोऊ बुरा नईं मानत हतो। सब हँस के टाल देत हते कि "चलो, अवसेरी ई तो आय!"

सीख: *बुन्देली में कहत हैं— "लाज ओखा जेके हाथ में खुरपा," अवसेरी के पास तो चतुरई की लाठी हती!*

10. दूल्हा राजा का निराला स्नान

एक बेर की बात आय, पुरानो जमानो हतो। रसिन गाँव में अवसेरी नाम को एक ब्राह्मण रहत हतो। जब ओको ब्याह पक्को भओ और रस्में शुरू भईं, तो गाँव-घर में भारी हँसी-ठट्ठा और मखौल होन लगो।

जेको ब्याह होत है, गाँव की रीत के हिसाब से लोग-बाग ओखा खूब तंग करत हैं। कोऊ अवसेरी की चुटिया (चोंटिया) पकड़ के हिला देत, तो कोऊ ओकी दाढ़ी खोंच लेत। ओई बखत उते खड़ी दुई मेहरिया (लुगाइयाँ) ओखा देख के हँसन लगीं और मजे लेत बोलीं— "**अरे ओ बाबा! तनक सम्हाल के राखा, नहीं तो जे लोग तुम्हारी चोंटिया और दाढ़ी उखेड़ के हाथ में धर दइहैं!**"

अवसेरी कउनो कम हतो का? वो तुरंत हँस के बोलो— "**अरे तुम हमारी फिकर न करो, मोरी चोंटिया खा कछू नहीं होन वालो, तुम तो अपनी चुटिया सम्हाल के राखा!**" जा बात सुन के सब जने ठहाका मार के हँस पड़े। एक मनई बोलो, "भइया! तुम्हारे हियाँ तो गजब को मजाक होत है!"

तालाब पे 'निरालो' कारनामा

उन दिना गाँव में आज के तान नल-टोंटी तो हते नहीं, सब कोई नहवे-धोवे खा तालाब या नदी पे जात हते। ब्याह के दिन अवसेरी भी गाँव के तालाब पे नहवे गओ। उसने अपने हाथ के कड़ा-वड़ा उतारे, किनारे धरे और सीधा पानी में कूद

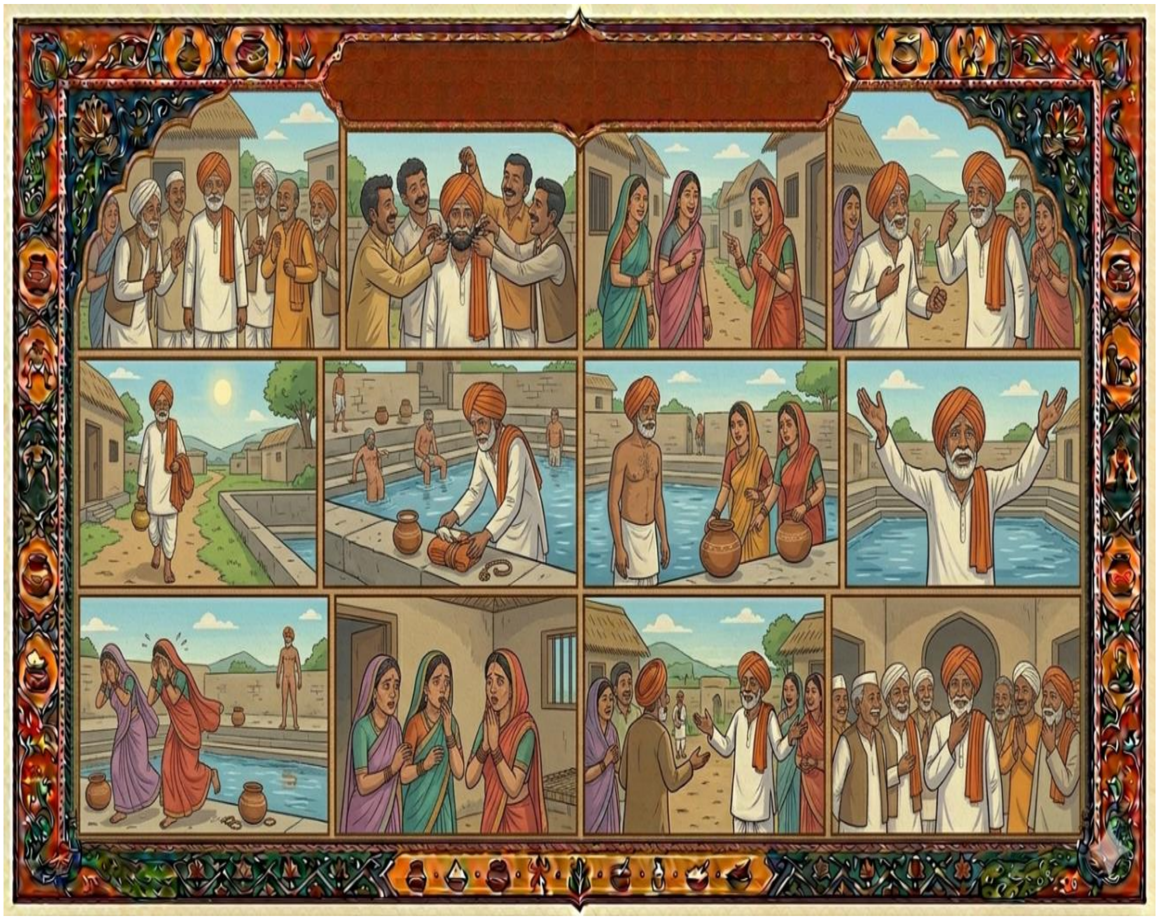

गओ।

उते घाट पे पानी भर रई मेहरिया फिर अवसेरी से ठिठोली करन लगीं— "**अरे दूल्हा राजा! अपनी चुटिया सम्हाले रहियो, कहीं पानी में बह न जाय या उखड़ न जाय।**"

अब अवसेरी जिद पे आ गओ। उसने सोची कि आज तो इनखा ऐसो जवाब देहूँ कि जे बोलबे लायक न बचें। उसने उतेई आव देखा न ताव, अपने सब कपड़े उतार दये और एकदम निर्वस्त्र (नंग-धड़ंग) हो गओ। मेहरियान की ओर देख के ललकार के बोलो— "**लो देख लो! देख लो जड़ें कितनी मजबूत हैं! अब बताओ कैसे उखड़ जैहै चोंटिया?**"

अवसेरी को जे निरालो रूप और ओकी ढिठाई देख के मेहरिया शर्म के मारे लाल हो गईं और मुँह छिपा के उते से सरपट भाग खड़ी भईं।

थोरी ई देर में पूरे गाँव में जा बात फैल गई कि अवसेरी ने तो हदई कर दई! लोग कहन लगे— "**भइया! मान गये, अवसेरी तो बड़ो निरालो और अल्हड़ मनई निकरो!**"

बुन्देली कहावत: *"हँसबे में डंडा बाज गो!"* (हँसी-मजाक में बात बढ़ गई, पै अवसेरी ने अपनेई अंदाज़ में सबको मुँह बंद कर दओ।)

11. सूखी रोटी और सक्कर को सुवाद

ई उज्जर ज़माने की बात आय जब इतिहासी गाम रसिन, बाँदा जिला की नरैनी तहसील के भीतर आवत तो। ऊ दिना आवै-जावै के आधुनक साधन तौ हते नईं, ऐसें दूर-दराज की गौनें (यात्राएँ) जाँकर पइदर ई तय करने परत थीं। एक बेर अवसेरी खाँ नरैनी तहसील की कचहरी में कौनों जरूरी काम लग गओ। रसिन से नरैनी की दूरी कोई पाँच-छह कोस (लगभग १५-१८ किलोमीटर) हती। अवसेरी ने मनई मन बिचार करो कि जे कूँ ओईं भिनसारै (तड़के) निकर लैं, तौ कचहरी खुलत-खुलत टेम पे पहुँच जैहें। ईं सोंच के ऊ भौतई सँबरे, जब चारों मूँधो-अँधियारो हतो, अपने घर से निकर पड़े।

भोर की वेला और सामाजिक यथार्थ (भिनसारो और गाम की रीत)

ऊ बखत गाम-गंवार में घरन के भीतर लैट्रीन-शौचालय की व्यवस्था तौ होत नईं हती। ईसें गाम की मेहरिया (महिलाएँ) लोक-लाज और संकोच के मारे सूरज निकरबे से पैलें, भिनसारै के अँधेरे ई में सौंच-पानी (नित्य-कर्म) के लाने खेतन डैं या सड़क के किनारों डैं जाती थीं। मर्यादा को नियम जो हतो कि जे कूँ गैल (रास्ते) से कौनों मरद निकरत दीखे, तौ मेहरिया लाज के मारे तुरत ओट में होबै की कोसिस करती थीं या ठाड़ी हो जाती थीं।

अवसेरी अपनी ई धुन और मस्ती में पगडंडी पे आगू बढ़ो जा रओ तो। गैल के दोनों कूँ कछू मेहरिया बैठी थीं, जो दूर से कौनों मरद की आहट पा के लोक-लाज के मारे झटपट ठाड़ी होबै लगीं। अवसेरी सुभाव से चंचल और बड़े मसखरे (विनोदप्रिय) हते। ई स्तिथि खाँ देख के ऊ जानबूझ के ज़ोर से बड़बड़ान लगो:

"कैसी फूटी करम है रे! इत्ती कड़कड़ाती सुबेरे में इत्ती दूर पइदर चल रए, पै गैल ऐसी सूनी और रूखी डरी है कि सँबरे-सँबरे कौनों सुभ चीज़ या नीके (सुंदर) मोहरा के दरसन तक नईं भये!"

तुरत-जवाब की हद

रास्ता के कूँ बैठी मेहरियन में से एक बड़ी निडर और हाजिरजवाब हती। अवसेरी की जे तानेबाज़ी (व्यंग्य) ओईं के कानन में पड़ी, तौ ऊने भी आव देखो न ताव और अवसेरी खाँ ओईं की औकात (मर्यादा) चेताने के लाने पलट के तीखे सुर में कही:

"अरे गैल चलते बटोही (राहगीर)! जे कूँ गैल में तुम्हें कौनों को दीदार (दरसन) हो भी गओ, तौ का ओईं से तुमाई भूख बुझ जैहै? का नीको मोहरा देख लेबे भर से तुम्हें सोंधी-सोंधी रोटियाँ मिल जैहैं? ईं-ऊँ की फालतू बातन करने के बजाय अपनी गैलें-गैल सीधे काए नईं चले जाँव?"

अवसेरी तौ अपनी प्रत्युत्पन्नमति (तुरत सटीक जवाब देबे की कला) के लाने पूरे इलाका में परसिद्ध हते। ऊने तनिकऊ टेम खराब नईं करो, और बड़ेई सुंत (शांत) पै चतराई भरे नाटकीय अंदाज में उत्तर दओ:

"देवी जू! तुम तौ उलटोई समझ बैठीं। मरो मतलब सिरिफ रूखी रोटियन से नईं तो। मैं तौ जे कह रओ तो कि जे कूँ सुबेरे-सुबेरे दरसन के संगै-संगै तुमाई मीठी बानी की मिठास (सक्कर) भी मिल जाए, तौ ई कड़े और लंबे रास्ता को अनंद दुगनो हो जाए। सूखी रोटी के संगै जे कूँ सक्कर को सुवाद मिल जाए, तौ दिन बन जात है!"

नचोड़

अवसेरी को जो बिन-सूँचो, चतराई से भरो और दो-अर्थी (द्विअर्थी) जवाब सुन के ऊ मेहरिया बिल्कुल निरुत्तर हो गई (मुँह ताकती रह गई)। ओईं खाँ समझ में आ गई कि बातन की लड़ाई में ई अनोखे मानुस खाँ हराइबो असम्भव है। ऊ बौतई लजा के तुरत उहाँ से ओट में (छिप) हो गई और आगू खाँ कभूँ कौनों अनपछान बटोही से ऐसें बहस करने की हिम्मत नईं करी।

जो प्रसंग ई बात को जीतो-जागतो प्रमान है कि अवसेरी सिरिफ सीधे सुभाव केई नईं हते, बल्कि उलटी और लाज-संकोच की बिरथा में भी अपनी चतुर गोठ (शब्दावली) से सामने वाले को घमंड पल भर में चूर-चूर करने की गजब की ताकत राखत हते।

12. ऊपर घी, नीचे माटी: तेजनिया खाँ चाटी

ई उई बखत की बात आय जब गाम-गंवार के जीवन में मियां-बीबी की लड़ाई और हंसी-मजाक के गजबे रंग देखन को मिलत थे। एक बेर कोऊ घरै की बात पे अवसेरी को अपनी लुगाई से भयंकर झगड़ा हो गओ। गुस्सा और खिसियाहट में आके उनकी औरत अपने मायके चली गई। लुगाई के चले जान से दुखी और अकेलेपन से अकुलाए अवसेरी ने मन बहलावे काजें उई समै की सामाजिक व्यवस्था के हिसाब से क्षेत्र की एक नामी गनिका (नर्तकी) के डेरा की तरफ डगर पकड़ लई। उई जुग में सहजाजपुर के आस-पास के पुरवन (मज रन) में कलावंत और गनिकाएं रहत थीं, जिते आस-पास के गामन के रसिक मानुस अपना मनोरंजन करन जात थे।

गनिका की मांग और अवसेरी की जुगत

जब अवसेरी उई गनिका (जाको नाम तेजनिया तो) के पास पहुँचे, तो उन्हेंने अपनी हैसियत के हिसाब से कछू टका-पैसा ओई के आगू रख दए। चूंकि उई दौर में रुपिया-पैसा की कीमत बहुत हती, सो अवसेरी को लगो कि इतनो बहुत है। पै तेजनिया उन थोड़े से सिक्कन से राजी नई भई। उसने अवसेरी को गामी भेष देखके ताना मारो:

"अरे भले मानस! इन दुई-चार सिक्कन से कछू नई होन वालो। तुम तौ देहाती हो, तुम्हारे पास गाय-भैंस जैसे पसुन की का कमी? घर में खूब दूध-घी होत हुईये!"

अवसेरी ने तुरंते हां में हां मिलाई और बोले, "हौ, दूध-घी की कौनों कमी नईं है।"

तेजनिया ने अपनी सरत रख दई, "ठीक है, फिर जे तुम मोरे काजें एक मटकिया भरके सुध देसी घी ले आओ, तो महफ़िल को आनंद लओ जाए।"

इतनो सुनतई अवसेरी तुरत घी को जुगाड़ करन अपने गाम की ओर दौरे। वे सुभाव से बड़े चतुर और तेज बुद्धि के सयान थे। उन्हेंने घर आके एक बढ़िया मटकिया लई। मटकिया के नीचे और बीच के हिस्सा में ठोस और साफ मटकी की माटी भर दई और उई के ठीक ऊपर पाव भर भैंस को सुध घी उढ़ेल दओ। मटकिया ऊपर से पूरी चकाचक और सुध घी से भरी दिखन लगी। जाड़े के दिन होने के कारन वो घी मटकिया के मूंड़ पे अछी तरह से जम गओ। चूंकि वो घर के चूल्हा पे तपाओ भओ सुध घी तो, सो उकी महक चारों तरफ फैल गई।

महक को जादू और भेद खुलबौ

अवसेरी वो मटकिया लेके फिर से तेजनिया के पास पहुँचे और गरब से बोले, "जे देखो, तुम्हारी इच्छा के हिसाब से साक्षात अमृत जैसो सुध घी ले आयो हूँ। उकी सुगंदई उकी सुधता को प्रमान है।"

तेजनिया मटकिया देखके और उकी महक सूंघके बड़ी राजी भई। उने कही, "वाह! घी तो सचमुच उत्तम दीखत है। तुम ऐसो करो, इसे भीतर ले जाके मोरी बैन (द्विजनिया) को दे आओ।"

अवसेरी ने मटकिया भीतर रख दई और तेजनिया के संग महफ़िल को आनंद लेवन लगे। इते भीतर बैठी द्विजनिया से घी की सोंधी महक के कारन रहौ न गओ। उने उताउली होयके मटकिया को ढक्कन खोलो और घी चाखन लगी। जैसेई उने ऊपर की जमी भई परत को कछू खोंदो, तो उसे नीचे सिर्फ सूखी माटी दिखी।

धोखा समझतई वो भीतर से चीख उठी, "अरी तेजनिया! बेगी आओ और सब कछू समेटो! अपने संग बड़ों छल हो गओ। ई मटकिया में तो सिर्फ माटी भरी है! ऊपर-ऊपर दिखावे काजें घी की एक पतली परत लगाई गई हती!"

उकी बात सुनके तेजनिया हक्की-बक्की रह गई और सिर पकड़के रोउत भई बोली, "हाय दैया! अब सब कछू समेटे से का फायदा? जो खेल होन तो, वो तो हो गओ। महफ़िल पूरी हो गई और हमारो मेहमान तो अपनी चतुरई दिखाके चलो गओ!"

तब तक अवसेरी अपनी तेज बुद्धि के बल पे अपनो काम निकालके उहां से मुसकुरात भए निकस चुके थे और चतुर कहावे वाली गनिकाएं हाथ मलत रह गईं।

उपसंहार

जे किस्सो जे साबित करत है कि अवसेरी को अपनी चतुर जुगतन से कोऊ को भी भरम में डारबे में महारत हासिल हती। उन्हेंने बिना कोऊ खरचा-पानी के अपनी इच्छा भी पूरी कर लई और अपनी हाजिरजवाबी से सामने वाले के लालच को करारों जबाब भी दे दओ।

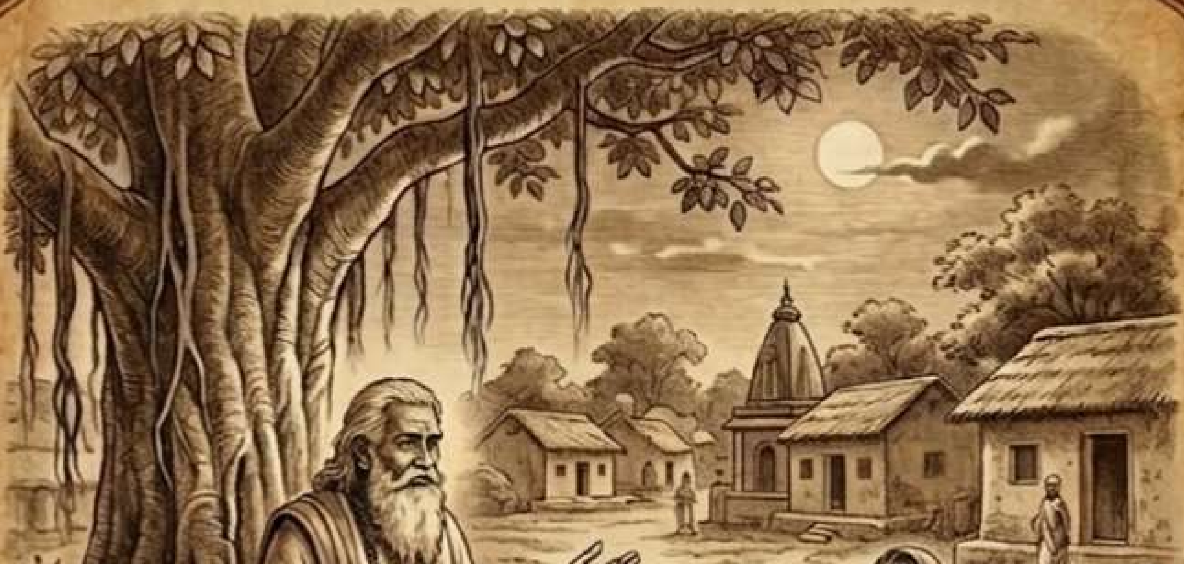

स्मृतियों की खुशबू: पुरानी कहानियों का जादू

हमारी विरासत हमारी कहानी

978-93-5917-896-7